

क्या बिना पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए आधुनिक जीवन संभव है ?

विपुल सिंह

कई वर्षों से मैं अपने छात्रों को पर्यावरण के विषय में पढ़ा रहा हूँ। मैं उन्हें पर्यावरण के लिहाज से इतिहास में हुई गलतियों और मौजूदा समय के मुद्दों के बारे में बतलाता हूँ। लेकिन मुझे यह भी बेहिचक स्वीकार करना चाहिए कि मैं विद्यार्थियों को जो पढ़ाता हूँ, उस पर अपने सांसारिक जीवन में खुद ही अमल नहीं कर पाता। यानी सिद्धांत और यथार्थ में भारी विरोधाभास है। आज पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बगैर गुजर-बसर करना मेरे या आधुनिक दौर के किसी भी मनुष्य के लिए असंभव-सा है। कहने को तो यह संभव दिखता है कि बिना बिजली के रहा जा सकता है, हम चाहे तो अपने घर की बिजली बंद कर सकते हैं। लेकिन हम आज जिस नगर सभ्यता-संस्कृति में हैं, उसमें घर के बाहर निकलते ही हमारा सामना सड़क की बत्तियों से होता है और उसके बिना हमारा बाहर निकलना असंभव लगता है। लेकिन ये बत्तियाँ जिस ताप बिजलीघरों की ऊर्जा से रोशन होती हैं, वह हमारे पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाता है। कहने का मतलब यह कि हममें से हरेक नगरपालिका कर के रूप में पर्यावरण के नुकसान में योगदान दे रहा है। असली प्रश्न यही है कि क्या आधुनिक तकनीक के सहारे धरती पर जीवन पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बगैर संभव नहीं है? मैं अपना अनुभव आपसे बाँटता हूँ।

मेरे बच्चे छुट्टियों में अपनी माँ के साथ दादा-दादी के पास गए थे। मैं दिल्ली के एक छोर पर अपने घर में अकेला था। सोचा, चलो निश्चिंत व बेफिक्र कुँवारे जीवन का आनंद उठाने का एक और मौका मिला। एक रविवार को मैंने तय किया कि कम से कम आज का दिन तो ऐसे बिताऊँ कि पर्यावरण पर कोई प्रतिकूल असर न पड़े। इसलिए मेरे दिमाग में पहली बात यह आई कि घर के कचरे का डब्बा भरने से बचा जाए। मैंने यह भी तय किया कि बगल के पार्क में टहलने जाते समय कार न चलाऊँ। इसी प्रकार मैंने एयरकंडिशनर भी बंद कर दिया, जो ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन की एक बड़ी वजह है। मैं पास के सुपर मार्केट में अपने बेटे की साइकिल से गया। यह भी निश्चय किया कि वही खाद्य पदार्थ, फल-सब्जियाँ खरीदूँ जो आसपास के इलाकों में पैदा होती हैं, दूर देश से न मंगाई जाती हों। यानी चीन और अमेरिका का सेब न खरीदा जाए। एक आदर्श पर्यावरणवादी बनने के लिए मैंने यह भी तय किया कि न टीवी चलाऊँगा, न लिफ्ट का प्रयोग करूँगा, न प्लास्टिक के बैग में कोई सामान खरीदूँगा, न ही पैकेट या डिब्बाबंद कोई चीज लूँगा। यह सोचकर मैं बाजार जाने लगा तो काफी समय से उपेक्षित पड़े जूट के थैले और सीसे के खाली जार साथ में ले गया। मैं सड़क के किनारे-किनारे साइकिल से बाजार के लिए चल पड़ा। अचानक मैंने पाया कि सड़क पर ट्रकों की लंबी कतार लगी है और ट्रैफिक रंग रहा है। ट्रकों से काला धुआँ निकल रहा था और मेरे

नथूने फूलने लगे, सांस अटकने लगी। बचने के लिए मैं साइकिल का पैडल तेज-तेज चलाने लगा और पसीने से लथ-पथ सुपर बाजार पहुँचा।

सुपर मार्केट पहुँचकर मैंने अपना खाली जार निकाला और काउंटर पर रखकर दुकानदार से बोला कि इनमें चावल, दलिया और तेल डाल दो। वह हक्का-बक्का मुझे घूरने लगा। पीछे खड़े लोग भी चकित थे। सभी मेरी तरफ ऐसे देख रहे थे मानो मैं कोई पागल हूँ। घर पहुँचा तो काफी थक चुका था और आदतन मैं लिफ्ट का बटन दबाने लगा। अचानक मुझे अपना वादा याद आया और सीढ़ियाँ चढ़कर दूसरी मंजिल पर स्थित अपने घर में पहुँचा। मैं पसीने से लथ-पथ था पर अपने वादे के मुताबिक पंखा या एयरकंडिशनर नहीं चला सकता था। मैं नास्ता बनाने के लिए रसोई में गया। इस बात का मुझे ख्याल था कि कोई पैकेटबंद चीज नहीं लेनी है क्योंकि पैकेटबंद वस्तुएँ किसी न किसी तरह पर्यावरण पर असर डालती ही हैं। इसलिए प्रेशर कुकर में हरी सब्जी के साथ दलिया बनाने चला। लेकिन एलपीजी गैस बर्नर जलाने बढ़ा तो मेरे सामने फिर नैतिक बाधा खड़ी थी। आखिर एलपीजी गैस से भी तो कार्बन उत्सर्जित होता है। यह मेरे एक दिन के सत्य के साथ परीक्षण का सबसे कठिन मोड़ था। बिजली, कार, लिफ्ट, आधुनिक किस्म के कचरे से निजात पाना फिर भी आसान है, लेकिन बिना भोजन के कोई कैसे रह सकता है?

सूर्यास्त होते-होते मैं हैरान-परेशान था। मैंने सोचा कि आज तो शरीर को पोषण देने वाला भोजन करना भी पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बगैर असंभव-सा हो गया है। आधुनिक दौर की सांसारिक सुख-सुविधाओं को छोड़ना तो एक बात है, पर्यावरण की रक्षा के लिए आधुनिक भोजन पद्धति पर भी लगाम लगानी होगी। दरअसल हम पर्यावरण पर असर पैदा करने वाली व्यवस्था से इस कदर जुड़ गए हैं कि पर्यावरण पर छाप या पदचिह्न छोड़े बिना अपनी जरूरतें भी पूरी नहीं कर सकते। चाहे हमारे घर का कूड़ा हो या हमारी जीवन-शैली से होने वाले प्रदूषण और ग्रीन हाऊस गैसों हों। जरा अंदाजा लगाएं कि हम रोजाना औसतन कितनी चीजें उपयोग में लाते हैं और कितनी फेंक देते हैं। ये सभी पृथ्वी की सतह पर अपना निशान छोड़ जाते हैं। अतः पर्यावरण पर मानव पदचिह्न से मेरा तात्पर्य यही है।

पर्यावरण पर 'मानव पदचिह्न' न होना पूर्ण रूप से संभव और साध्य नहीं है। अतः मैंने अपने विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए विकल्पों की खोज की शुरुआत की, ताकि पर्यावरण पर मानव पदचिह्नों को कम किया जा सके। पहली चीज मैं उन्हें बताता हूँ कि टीवी देखना, मोबाइल पर बातें करना बंद कर दें। पढ़ना और मित्रों के साथ समय बिताना शुरू करें। इससे जीवन में रचनात्मकता तो बढ़ेगी ही, पर्यावरण के नुकसान में हमारा योगदान भी घटेगा। हमें उपभोक्तावाद की बुराइयों को भी कम करने की जरूरत है। हमें अपने उपभोग के लिए नितांत आवश्यक सामान ही खरीदना चाहिए तथा उनका अधिकतम उपयोग करना चाहिए, ताकि वे व्यर्थ न हों। इससे हमारे युवकों के जीवन में एक तरह का नियोजन आएगा। यह नियोजन उन्हें देश का जिम्मेदार नागरिक बनाएगा जो भारत और मानवजाति के आर्थिक विकास में मददगार होगा। मैं अपने विद्यार्थियों के सामने बुद्ध के विचार रखता हूँ। उनके अनुसार जीवन के दो चरमबिंदु हैं—पहला लोभ और लालच से आबद्ध जीवन और दूसरा तपश्चर्या से सांसारिक सुखों का त्याग। इन दोनों चरम बिंदुओं के बीच 'मध्य मार्ग' है। अतः पर्यावरण की हानि को रोकने के लिए साधु बनने की जरूरत नहीं है; क्योंकि इसका अर्थ होगा अपने आपको मानव मानने से पूर्णतया अस्वीकार करना।